उपसंहार

उपसंहार

साठोत्तरी कवियों में धूमिल अपना विशिष्ठ स्थान रखते हैं। व्यंग्य उनके काव्य का प्राण है। अपनी कविताओं के माध्यम से वे समाज, राजनेता, शिक्षा-क्षेत्र , रूढ़ि-परंपराएँ, बाह्याडम्बर आदि बातों पर करारा व्यंग्य करते आये हैं। धूमिल ने अपने जीवन में अनेक अभावों का सामना किया और इसी अभावग्रस्त जीवन की वजह से उनकी कविताओं में इसका प्रतिबिम्ब चित्रित हुआ है। कहा जाता है कि धूमिल का काव्य उन्होंने भोगी हुई यातनाएँ समाज में स्थित असंगतियाँ तथा विषमताएँ और कठोर संघर्षमय यथार्थ जीवन का प्रतिबिम्ब है।

बनारस के पास खेवली नामक ग्राम में धूमिल का बचपन बीता। बारह वर्ष के धूमिल के सर पर जो छत्र था वह पिताजी की मृत्यु होने से उठ गया। वे अपने जीवन में इंटर तक ही पढ़ सके। आगे चलकर घर की सारी जिम्मेदारी उनपर आ पड़ी। परिणाम स्वरूप उन्हें नौकरी की तलाश में घर छोड़कर कलकत्ता जाना पड़ा। वहाँ उन्होंने लोहा ढोने जैसा कठिनतम काम किया। अपने पूरे जीवन में उन्होंनें किसी के सामने सर नहीं झुकाया। जब उनका मन नौकरी में नहीं लगा तब उसे छोड़कर वे अपने गाँव वापस चले आये। बचपन से ही साहित्य में दिलचस्पी रखनेवाले धूमिल ने अपने गाँव में ही छोटी मोटी नौकरी करते हुये कविताएँ लिखना आरंभ किया। अपनी तीखी भाषा के कारण उन्हें हमेशा आलोचकों का लक्ष्य बनना पड़ा। अपने जीवन-काल में उनका केवल एक कविता-संग्रह छपा, जो "संसद से सड़क तक" नाम से परिचित है। १० फरवरी, १९७५ इ. को ब्रेन-ट्युमर के कारण उम्र की ३८ साल में ही धूमिल हमेशा के लिए हमें छोड़कर चले गये।

धूमिल को परिस्थितिने लोहा ढोने का काम करने को मजबूर क्यों न किया हो लेकिन उस हाल में भी वे अपने फर्ज को नहीं भूले। उनका व्यक्तित्व ही उनकी कविताओं को आकार देता रहा है। उनकी लिखी हुई अन्य कविताओं को उनके मरणोपरांत उनके बेटे ने "शुदामा पाण्डे का प्रजातंत्र" और "कल सुनना मुझे" कविता-संग्रह के रूप में पाठकों के सामने रखा है।

प्राचीन काल से लेकर आज तक लिखे व्यंग्य का अध्ययन करने पर हमें यह कहना पड़ेगा कि प्रत्येक काल में व्यंग्य उद्देश्य को सामने रखकर लिखा जाता रहा है। स्वातंत्र्योत्तर काल में व्यंग्य का स्वरूप बदलता चला गया। प्रस्तुत काल में व्यंग्य को एक विधा के रूप में स्वीकारा गया है। अंग्रेजी से हिन्दी में कई व्यंग्य रचनाओं के अनुवाद किये गये। वर्तमान काल के सभी साहित्यिकों ने व्यंग्य को विधा के रूप में अपनाया। भारत की सभी भाषाओं में साहित्यकारों ने व्यंग्य द्वारा अपना साहित्य पाठकों के सामने रखा है। स्वतन्त्रता के पश्चात जिन नेताओं से राष्ट्र को आगे बढ़ाने की कामना जनता ने की थी उन्हीं नेताओं ने भ्रष्टाचार और बेईमानी का जाल फैलाया। देश को नीचा दिखाने में इन्हीं नेताओं का हाथ रहा। वर्तमान साहित्यिकों ने इस अव्यवस्था को व्यंग्य के माध्यम से पाठकों के सामने रखा है।

हिन्दी साहित्य में व्यंग्य एक आधुनिक सशक्त स्वायत्तापूर्ण विधा है। स्वातंत्र्योत्तर काल में समाज में फैली विसंगतियों को साहित्यिकों ने अपनी व्यंग्यात्मक शैली से साहित्य में दिखाया। व्यंग्यकार समाज में फैली बुराईयों को दूर करने में आदर्श माता-पिता के समान कार्य करता है। व्यंग्य समाज को डांटता है, शासन करता है और यह समाज परिवर्तन के लिए ही किया जाता है। वर्तमान साहित्य में व्यंग्य ही वह माध्यम है जिससे समाज परिवर्तन को बड़ी मात्रा में आशा की जाती है।

व्यंग्य को लेकर आदिकाल से अब तक अगर विचार किया जाये तो हमे यह कहना पड़ेगा कि समाज परिवर्तन के साथ-साथ व्यंग्य की विषयवस्तु में भी परिवर्तन आ गया है। व्यंग्य विधा हमेशा असंगतियों को लक्ष्य बनाकर गिरगिट के तरह अपना रंग बदलती रही है। वर्तमान युग में व्यंग्य की लोकप्रियता इतनी बढ़ गई है कि विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में भी व्यंग्य रचनाएँ समाविष्ठ की जा रही हैं। इस की लोकप्रियता में व्यंग्यकार, समीक्षक, पाठक, आकाशवाणी, दूरदर्शन, पत्र-पत्रिकाएँ, रंगमंच आदि का सहयोग बहुत महत्त्वपूर्ण रहा है। व्यंग्य का प्रभाव समाज के हर क्षेत्र में पहुँचा है। समाज के सभी वर्गों में बढ़ती हुई विसंगतियों को दिखाने का कार्य व्यंग्य ही करता है।इस दृष्टि से व्यंग्य अपना अलग महत्त्व रखता है। वर्तमान युग में व्यंग्य ही वह साधन है जिससे साहित्यकार अपने साध्य तक पहुँच सकता है। व्यंग्य ही इस तेज दुनिया का सामना कर सकता है।

धूमिल का सारा काव्य व्यंग्यात्मक है, उनकी प्रत्येक कविता स्वातंत्र्योत्तर भारत का सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक चित्र प्रस्तुत करती है। धूमिल ने अपने युग के सभी विषयों को पाठकों के सामने रखा है। प्रस्तुत काव्य-संग्रह की प्रत्येक कविता किसी-न-किसी महत्त्वपूर्ण समस्या को उजागर कर देती है। उनकी प्रत्येक कविता सोद्देश्य है, साथ ही साथ भाषा, शब्दरचना गरिमामय है।

प्रस्तुत कविता-संग्रह में राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक विषमताओं के साथ-साथ वर्ग-चेतना, नारी समस्या आदि की भी अभिव्यक्ति धूमिल ने बेझीझक की है। उन्हें राजनीतिक समझ, ऐतिहासिक बोध एवं सामाजिक दायित्व के साथ-साथ वर्ग-चेतना की सही पहचान थी। उनकी प्रत्येक कविता अपने-आप में भिन्न होते हुए भी किसी-न-किसी गहरे सत्य को पाठकों के सामने रखती है। कुछ कविताओं में धूमिल ने राजनीति पर गहरा व्यंग्य

कला है तो कुछ कविताओं में समाज पर। वैयक्तिक धरातल पर निखरती एक-दो कविताओं को छोड़ अन्य सभी कविताएँ धूमिल की गहरी मानसिकता का प्रमाण हैं। उनकी प्रत्येक कविता पाठक को हर दम सोचने पर मजबूर करती है। यही वह कारण है कि "संसद से सड़क तक" सातवे दशक का बहुचर्चित काव्य-संग्रह रहा है।

व्यंग्य धूमिल के काव्य का मुख्य स्वर रहा है। अपने तीखे व्यंग्य के माध्यम से उन्होंने समाज के प्रत्येक विसंगति को पाठकों के सामने रखा है। उन्होंने वर्तमान के राजनीतिक पक्ष पर जितना विरोध किया उतना संभवत: समकालीन कवियों में अन्य किसी ने किया होगा। व्यवस्था के इन दलालों को वे अपनी कविताओं में फटकारते रहे हैं। धूमिल के मनमें जनता के प्रति अपार वेदना थी। वे जनता की परेशानियों से परिचित थे। उसकी रुढ़िवादी भावनाओं और बेबस उदासीनता पर बार-बार प्रहार करते रहे। उन्होंने उन कारणों की भी अपनी कविता में चर्चा की है जिन कारणों से जनता का जीवन कमजोर हो गया है। उनकी प्रत्येक कविता में सामाजिक विद्रूपता और मानवीय दुर्बलता दिखाई देती है। उनका व्यंग्य गाँव या शहर तक ही सीमित नहीं था बल्कि उन्होंने नेता, अध्यापक, युवक-युवती, शहरी-देहाती तथा विविध नोकर पेशा लोगों तक अपने कविता का विषय बनाया है। उनकी कविताओं में प्रयुक्त शब्द पाठकों के मन में क्षण भर के लिए क्यों न हो लेकिन जरूर एक विचित्रसी हलचल मचा देते हैं।

धूमिल की कविताओं में दिखाया गया व्यंग्य वर्तमान समाज को बदलने का आग्रह करता है। एक ओर उन्होंने राजनेताओं को अपने कविता का निशाना बनाया है तो दूसरी ओर अन्याय सहनेवाले समाज को भी दोषी ठहराया है। लेकिन जहाँ जनता पर व्यंग्य किया है, वहाँ उनकी जनता के प्रति सहानुभूति व्यक्त हुई है। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि धूमिल ने

राजनीति से लेकर समाज तक और वर्तमान अर्थ-व्यवस्था से लेकर समाज में चले आ रहे रूढ़ि-परम्पराओं तथा आडम्बरों पर अपनी लेखनी चलायी है।

प्रस्तुत कविता-संग्रह में धूमिल ने समाज में पायी जानेवाली विसंगतियों को पाठकों के सामने रखा है। उनकी कविताओं में परिवार, समाज तथा देश की विविध समस्याओं का प्रस्तुतिकरण पाया जाता है। सामन्यत: उन्होंने भूख समस्या, नारी समस्या, व्यवस्था की समस्या, अकाल समस्या, यौन तथा सेक्स सम्बन्धी समस्या, बेकारी की समस्या, साहित्यिक समस्या आदि समस्याओं पर प्रकाश डाला है।

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि धूमिल सही अर्थों में समस्या-प्रधान कवि रहे हैं। उन्होंने एक ऐसे शोषण-मुक्त स्वस्थ समाज की कामना की थी जिसमें मूलभूत आवश्यकताओं की कभी कमी न हो। लेकिन उनका यह सपना अधूरा रहा। वर्तमान राजनेताओं ने उनके इस सपने को कभी पूरा होने नहीं दिया। वर्तमान की इन सभी समस्याओं की जड़ उन्होंने विकृत राजनीति में पायी तभी तो वे अपने तीखे व्यंग्य के माध्यम से राजनेताओं की खाल उधेड़ते रहे हैं। वर्तमान की इन समस्याओं को सामने रखने का उनका उद्देश्य यही रहा कि देश सुखी हो जाये। यहाँ के गरीब लोगों को पेटभर रोटी, पहनने के लिए कपड़ा और रहने के लिए मकान मिले। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि धूमिल अपने समय की प्राय: सभी प्रकार की समस्याओं से परिचित थे। इसीलिए उन्होंने यहाँ की छोटी से छोटी समस्या से लेकर बड़ी से बड़ी समस्या को पाठकों के सामने रखा है।

उपलब्धियाँ:-

[१] धूमिल ने अपनी कविताओं के माध्यम से राजनेताओं पर तीखा व्यंग्य किया है। राजनेताओं की करतूतों को जनता के सामने रखकर जनता को सचेत करना ही प्रस्तुत काव्य-संग्रह की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

[२] धूमिल की कविताओं को पढ़नेवाला कोई भी संवेदनशील पाठक अपने जीवन में सुधारवाद और नैतिकता को बढ़ावा देता रहेगा और अन्याय और अत्याचार का सामना करेगा ।

[३] धूमिल की कविताएँ निश्चित रूप से समाज का दर्पण हैं जिसमें किसी भी युग की सामाजिक समस्याओं को देखा जा सकता है।

अनुसंधान की नई दिशाएँ :-

धूमिल ऐसे कवि हैं जिन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से वर्तमान समाज में स्थिति सभी विषयों को उठाया है। इस दृष्टि से उनके समग्र काव्य पर निम्न दिशाओं में स्वतंत्र रूप से अनुसंधान किया जा सकता है।

[१] धूमिल के समग्र काव्य में चित्रित व्यंग्य।
[२] धूमिल के काव्य में यथार्थ-बोध।
[३] धूमिल के काव्य में समकालीन-बोध।
[४] धूमिल के काव्य में चित्रित समस्याओं का मूल्यांकन।

यहाँ मेरे अपने विषय की सीमा है। शायद आनेवाले शोधार्थी भविष्य में उपर्युक्त विषयों पर शोधकार्य करेंगे।

सन्दर्भ ग्रंथ – सूची

- सन्दर्भ ग्रन्थ - सूची -

[अ] आधार-ग्रन्थ

१] धूमिल "संसद से सड़क तक" राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली छठा संस्करण : १९९० ।

[आ] सहायक-ग्रन्थ -

१] डॉ. ग. तु. अष्टेकर "कटघरे का कवि "धूमिल"" पंचशील प्रकाशन, जयपुर, प्रथम संस्करण, १९८४ ।

२] डॉ. वी. कृष्ण "क्रान्तिदर्शी कवि धूमिल" सीता प्रकाशन, हाथरस प्रथम संस्करण, १९९४ ।

३] गर्ग [डॉ.] शेरगंज "स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में व्यंग्य" साहित्य भारती प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, १९७३ ।

४] गुप्ता [डॉ.] घनश्यामलाल "सुदामा पाण्डे धूमिल की कविता : में यथार्थ-बोध" भावना प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, १९९० ।

५] गोरे बलभीमराज "हिन्दी के बहुचर्चित काव्य नये सन्दर्भ" अनुभव प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण, १९९० ।

६] चतुर्वेदी [डॉ.] बरसानेलाल "आधुनिक हिन्दी काव्य मे व्यंग्य" प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, १९७३

७] चतुर्वेदी [डॉ] बरसानेलाल "हिन्दी साहित्य में हास्य रस" हिन्दी साहित्य संसार प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, १९६३ ।

८] तिवारी[डॉ.] बालेन्दुशेखर "हिन्दी का स्वातंत्र्योत्तर हास्य और व्यंग्य" अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण, १९७८ ।

९] द्विवेदी हजारीप्रसाद "कबीर" राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, १९७१ ।

१०] देसाई[डॉ.] बापूराव "स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी व्यंग्य निबन्ध एवं निबन्धकार" चिन्तन प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण, १९८७ ।

११] देसाई[डॉ] बापूराव "हिन्दी व्यंग्य विधा शास्त्र और इतिहास" चिन्तन प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण, १९९० ।

१२] धूमिल "सुदामा पाण्डे का प्रजातन्त्र" वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, १९८४ ।

१३] धूमिल "कल सुनना मुझे" युगबोध प्रकाशन, वाराणसी, प्रथम संस्करण, १९७७ ।

१४] परसाई हरिशंकर "सदाचार का तावीज" भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, १९६३ ।

१५] डॉ. मलय "व्यंग्य का सौन्दर्यशास्त्र" साहित्यवाणी प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, १९८३ ।

१६] माचवे[डॉ.] प्रभाकर "तेल की पकौड़ियाँ" ज्ञानोदय प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, १९६२ ।

१७] मिश्र[डॉ.] ब्रह्मदेव "धूमिल और उसका काव्य-संघर्ष" लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण, १९९४।

१८] राजपाल[डॉ.] हुकुमचंद "समकालीन बोध और धूमिल का काव्य" कोणार्क प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, १९९०।

१९] राहुल "विषध का कवि धूमिल" नीरज बुक सेंटर, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, १९९२ ।

[इ] कोश

१] सं. धीरेन्द्र वर्मा "हिन्दी साहित्य कोश भाग - १ " वाराणसी ज्ञानमण्डल, लिमिटेड, वाराणसी, द्वितीय संस्करण, १९६३ ।